हरियाणा के लोक संगीत में नाद सौन्दर्य

पूनम रानी
पीएच0 डी0 शोधकत्री
दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली)

मानव मन में अदभूत असंख्या भावों के अर्न्तगत सुख तथा दुःख यह दो प्रमुख भाव है इन मनोंभावों का स्वरूप अमूर्त होता है, इन भावों को मूर्त रूप देने के लिए अर्थात् इनकों अभिव्यक्त करने के प्रयासों ने ही विभिन्न कलाओं को जन्म दिया है, जिनके अन्तर्गत संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, काव्य, नृत्य, अभिनय आदि उल्लेखनीय है, नाट्य ने इन सभी कलाओं का समन्वय परिलक्षित होता है, कलाओं की उत्पत्ति में आनंद की उपलब्धि एक मूल प्रवृत्ति है, किन्तु हमारा विषय केवल हरियाणा के लोक संगीत में व्याप्त नाद–सौन्दर्य से है

हरियाणा के लोकसंगीत में व्याप्त सौन्दर्य जानने से पूर्व संक्षेप में यह जानना अति आवश्यक है कि सौन्दर्य का किसी भी कला में क्या स्थान है, कलात्मक उपयोगिता में उसकी क्या भूमिका है, सौन्दर्य–बोध मानव की एक भावमूलक सहज प्रवृत्ति है मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधार पर सौन्दर्य की यह प्रवृत्ति, परितुष्टि, संतुष्टि, तृप्तता एवं आनन्द ग्रहण आदि से संबधित रहती है।

हरियाणा प्रांत के लोकगीत अर्थात् लोक गीतों, गाथाओं में सौन्दर्यपूरक सभी तत्व विद्यमान होते है इन लोकगीतों गाथाओं में लयमूलक सौन्दर्य, नादात्मक सौन्दर्य तथा स्वर का सही लगाव रसोत्पत्ति के साथ–साथ गीतों के भाव–पक्ष, कला–पक्ष के भी सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते है इनमें सौन्दर्य पक्ष को सुदृढ़ता प्रदान करने वाले सभी तत्व विद्यमान हैं, वास्तव में हरियाणा प्रांत के लोकगीतों में सौन्दर्य स्थूल भी है, सुक्ष्म भी, प्रत्यक्ष भी और परोक्ष भी है।

सौन्दर्य की उत्पत्ति रस तत्व से होती है, 'रस' का तत्व को काव्य तथा संगीत की आत्मा माना जाता है, विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि माधुर्य एवं रस के अभाव में कोई भी सांगीतिक रचना नीरस होती है आचार्य भरत ने अपने ग्रन्थ नाट्य शास्त्र में रस के सिद्धांत की अद्वितीय व्याख्या दी है,

हरियाणा प्रदेश के लोकसंगीत में भी रस–सौन्दर्य स्वयं ही सम्मलित हो जाता है क्योंकि हरियाणा प्रांत के लोकगीत यहां के सदाचार एवं समाजिक जीवन

की झांकी का साकार रूप प्रस्तुत करते है जिनमें उनके जीवन के सुख–दुख, आशा–निराशा, मधुरता, मधुरता–कडवाहट घुली मिली सी रहती है जीवन की यही विभिन्न अनुभूतियां गीतों के रूप में मुखरित हो यहां के धूलि–कणों से झंकृत होती है अतः इन गीतो के माध्यम से पाठय एवं श्रोता अपने अर्न्तमन को गुंजरित करता हुआ अनुभव करते है, यही गीत–गुंजन हरियाणा के लोकगीतों में व्याप्त रस है, आनन्द है, एक मनोरंजन की तृप्ति है, यही इन गीतों के रसात्मक सौन्दर्य का सफल एवं जीवन्त प्रमाण है, हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों में सभी रसों का समावेष है इन गीतों में श्रृंगार, करूणा, हास्य, वात्सल्य आदि रसों की प्रधानता है अन्य रसों का भी यन्त्र–तन्त्र सहज रूप से रसपान किया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि हरियाणा का लोक संगीत "सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम" की भावना से ओत–प्रोत हैं

सन्दर्भ सूची

1. लोकगीतों में नाद–सौन्दर्य पुष्पा शर्मा

2. हरियाणा के लोकगीतों में भक्ति भावना, डॉ0 रेखा शर्मा

3 हरियाणा के लोकगीत, साधुराम शारदा

4 हरियाणा का लोकसंगीत, रीता धनकर

5. हरियाणवी संगीत का उद्‌भव एवं विकास डॉ0 राममेहर सिंह